जसोदा हरि पालनैं झुलावै

Jasoda Hari Palne Jhulawe • भजन • देवनागरी

जसोदा हरि पालनैं झुलावै।
हलरावै, दुलरावै मल्हावै, जोइ-जोइ कछु गावै॥

मेरे लाल कौं आउ निंदरिया, काहैं न आनि सुवावै।
तू काहैं नहिं बेगहिं आवै, तोकौं कान्ह बुलावै॥

कबहुँ पलक हरि मूँदि लेत हैं, कबहुँ अधर फरकावै।
सोवत जानि मौन ह्वै कै रहि, करि-करि सैन बतावै॥

इहिं अंतर अकुलाइ उठे हरि, जसुमति मधुरैं गावै।
जो सुख सूर अमर-मुनि दुरलभ, सो नंद-भामिनि पावै॥

रचना / पाठ-परंपरा: सूरदास का पारंपरिक ब्रजभाषा पद।
पारंपरिक पाठ; वर्तनी और पाठांतर संभव हैं।